मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -4 | अंक - 8 | जयपुर | जनवरी - मार्च 2019 | पृष्ठ संख्या - 1

निदेशक की कलम से...

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी

निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान देश के शीर्षस्थ प्रौद्योगिकी संस्थानों में से एक है। हमारा प्रयास सदा से यह रहा है कि यहाँ आप अपनी तकनीकी शिक्षा के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में भाग ले कर अपना सर्वांगीण विकास करें। सम्पूर्ण व सर्वांगीण विकास से मेरा तात्पर्य शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास से है। यह तब ही संभव है जब आप अपने अध्ययन के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में भी भाग लें। संस्थान में शिक्षा के अतिरिक्त इंडोर व आउटडोर खेलों व प्रशिक्षण कि व्यवस्था है। संस्थान में एक अच्छी श्रेणी का जिम है यहाँ व्यायाम के लिए आधुनिक मशीनरी उपलब्ध है। संस्थान तकनीकी, विज्ञान व अन्य विविध विषयों की उत्कृष्ट पत्रिकाओं के साथ एक अच्छे पुस्तकालय कि व्यवस्था है। यहाँ ऑनलाइन सभी पत्र पत्रिकाए उपयोग में ली जा सकती है। प्रतिवर्ष यहाँ ''टैक्नो क्लचरल फैस्टीवल'' व समय समय पर छात्रों द्वारा साहित्यकी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन सभी गतिविधियों के संचालन व निर्देशन के लिए हमारी संकाय सदस्यों, अधिकारियों व कर्मचारियों की टीमें अपने सततः व अथक प्रयास कर रही हैं। विद्यार्थियों को अपनी रूचि व क्षमता के अनुसार इसमें भाग लेना चाहिये। संस्कार व संस्कृति के उत्थान के मध्यनजर विद्यार्थियों के लिए विविध ध्यान योग व अध्यात्म सत्रों का आयोजन किया जाता है अतः ऐसे अतिमहत्वपूर्ण आयोजनों में सभी को नियमित रूप से भाग लेना चाहिये। युवा शक्ति राष्ट्र की बुनियाद होती है यदि आप तकनीकी शिक्षा के अतिरिक्त अन्य रूप में भी अपने व्यक्तित्व का विकास करेंगे तो आपका यह शिक्षण संस्थान ही नहीं वह क्षेत्र भी आसमान की बुलंदियों को स्पर्श करेगा जहाँ आप भविष्य में काम करेंगे। इस संस्थान परिवार के सभी सदस्यों की अपनी एक रचनात्मक भूमिका है। हमारे सभी के सत सकर्म व समन्वयित प्रयास ही संस्थान को इस उच्च स्तर तक लेकर आये हैं तथा हमें अपने विकास के कार्यों से इस संस्थान को और भी आगे ले जाना है संस्थान के हमारे प्रतीक चिन्ह में जो प्रेरणा का उद्घोष ''योगः कर्मसु कौशलम्'' अंकित है वो हमारे सकारात्मक कर्म व प्रेरणा का स्त्रोत है, जिसे हमें सदैव अपनी स्मृति में रखना है। आप सभी के अथक प्रयास ही इस संस्थान को ऊँचाईयों पर ले जायेंगे ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

सभी धर्म ग्रन्थों व धर्म गुरूओं का आदर करना, धर्म निष्ठ व्यक्तियों की निशानी है। सभी धर्म स्थल मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर, सम्मान के काबिल हैं। सभी अपने अपने धर्मों के सिद्धान्तों को सही तरह से समझ कर पालन करें, ईश्वर भक्त बनें व धार्मिक सहिष्णु बनें।

जीवन का सर्वांगीण विकास

जीवन का सर्वांगीण विकास मालवीय जी की शिक्षा-पद्धति का मूलमन्त्र था। वे चाहते थे कि विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि वे अपनी शारीरिक, बौद्धिक तथा भावात्मक शक्तियों को परिपुष्ट और विकसित कर सकें, और आगे चल कर किसी व्यवसाय द्वारा सच्चाई और ईमानदारी से अपना जीवन निर्वाह कर सकें, कलापूर्ण और सौन्दर्यमय जीवन व्यतीत कर सकें, समाज में आदरणीय और विश्वासपात्र बन सकें, तथा देशभक्ति से, जो मनुष्य को उच्चकोटि की सेवा करने की ओर प्रवृत्त करती है, अपने जीवन को अलंकृत कर राष्ट्र की समुचित सेवा कर सकें।

मालवीयजी शिक्षा को मानव मात्र का अधिकार, तथा उसका समुचित प्रबन्ध राज्य का कर्त्तव्य समझते थे। वे चाहते थे कि राष्ट्रीय प्रणाली के आधार पर प्रारम्भिक और माध्यमिक स्कूलों में सर्वसाधारण के लिए शिक्षा निःशुल्क दी जाय, जो अनिवार्य भी हो। उनका कहना था कि सब स्तर पर शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई बच्चा निर्धन होने के कारण उससे वंचित न रहे पाये। वे बम्बई के भूतपूर्व गवर्नर एलफिन्स्टन की इस बात से सहमत थे कि ''गरीबों की सुख शान्ति बहुत हद तक शिक्षा पर निर्भर है। इसके जरिये ही वे विवेक और आत्मसम्मान का स्वभाव प्राप्त कर सकते हैं जिससे सब गुण विकसित होते हैं।'' उनकी धारणा थी कि शिक्षा का व्यापक विस्तार

एक अनमोल शख्सियत

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

समाज में फैली बहुत सी विषमताओं और कुरतियों को दूर करके छोटी जातियों का जीवन स्तर ऊँचा उठा देगा, और समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करना उनके लिए सुलभ हो जायगा। काशी विश्वविद्यालय में उन्होंने प्रारम्भ से ही हरिजन विद्यार्थियों के लिए शिक्षा निःशुल्क कर दी थी।

मालवीयजी स्त्री शिक्षा का समुचित प्रबन्ध भी समाज का पुनीत कर्त्तव्य समझते थे। उनका कहना था कि पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ही भारत की भावी सन्तानों को माताएँ है। वे हमारे भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्त्वज्ञानियों, व्यापार तथा कलाकौशल के नेताओं आदि की प्रथम शिक्षिकाएँ है।

वे चाहते थे कि एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के आधार पर स्त्रियों को इस तरह शिक्षित किया जाय कि उनमें ''प्राचीन तथा

शेष पृष्ठ 4 पर...

ईश्वर का साक्षात्कार असाधारण योग्यतायें

1970 की घटना है तिरूवन्तपुरम में समुद्र के पास एक बुजुर्ग भगवद्गीता पढ़ रहे थे तभी एक नास्तिक और होनहार नौजवान उनके पास आकर बैठा। उसने उन पर कटाक्ष किया कि लोग भी कितने मुर्ख हैं विज्ञान के युग में गीता जैसी ओल्ड फैशन्ड बुक पढ़ रहे हो। उसने उन सज्जन से कहा कि आप यदि यही समय विज्ञान को देते तो देश ना जाने कहां पहुँच गया होता। उन सज्जन ने उस नौजवान का परिचय पूछा तो उसने बताया कि वो कोलकत्ता से है और विज्ञान की पढ़ाई की हे अब यहाँ भाभा परमाणु अनुसंधान में अपना कैरियर बनाने आया हूँ।

आगे उसने कहा कि आप भी थोड़ा ध्यान वैज्ञानिक कार्यों में लगाएं भगवद्गीता पढ़ते रहने से आप कुछ नहीं प्राप्त कर पाओगे। सज्जन मुस्कुराते हुए जाने के लिये उठे, उनका उठना था कि 4 सुरक्षाकर्मी वहाँ उनके आस पास आ गये। आगे ड्राइवर ने कार लगा दी जिस पर लाल बत्ती लगी थी। लड़का घबराया और उसने उनसे पूछा आप कौन है?

उन सज्जन ने अपना बताया 'विक्रम साराभाई' जिस भाभा परमाणु अनुसंधान में लड़का अपना कैरियर बनाने आया था उसके अध्यक्ष वही थे। उस समय विक्रम सारा भाई के नाम पर 13 अनुसंधान केन्द्र थे। साथ ही परमाणु योजना आयोग के अध्यक्ष भी थे। लड़का शर्मसार होकर साराभाई के चरणों में रोते हुए गिर पड़ा। तब साराभाई ने बहुत अच्छी बात कही। हर निर्माण के पीछे निर्माणकर्ता अवश्य है। इसलिये फर्क नहीं पड़ता ये महाभारत है या आज का भारत, ईश्वर को कभी मत भूलो। आज नास्तिकगण विज्ञान का नाम लेकर कितना नाच लें। मगर इतिहास गवाह है कि विज्ञान ईश्वर को मानने वाले आस्तिकों ने ही रचा है ईश्वर सत्य है इसे भुलाया नहीं जा सकता।

यद्यद्विभतिमत्सत्त्व श्रीमद्र्जित मेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोदशसम्भवम्।

(10/41 भगवद्गीता)

मनुष्य में जहाँ कहीं कोई भी विभूति (विशेषता) है विभूति दो प्रकार की हो सकती है। बौद्धिक और शारीरिक। ये सब विभूति के अन्तर्गत आती हो और जहाँ असामान्य सम्पत्ति हो वह धन हो सकता है भूमि, रत्न आदि हो सकते हैं। जहाँ भी असामान्य क्षमता पाई जाती है, भगवान कहते हैं इन सबको मेरे तेज से अथवा अंश से उत्पन्न समझो। यहाँ भगवान ने अपने को तेज और अंश दो रूपों में विभक्त किया है। विभूति मना भगवद्रीय अंश है क्योंकि भगवान सबके हृदय में अन्तर्यामी रूप से उपस्थित हैं। इस अन्तर्यामी का अंश जब कुछ अधिक प्रकाशित होता है तब विद्या, बुद्धि, प्रतिभा अधिक प्राप्त होती है और बाहरी सम्पत्ति, शारीरिक सौंदर्य, भूमि व धन दौलत भगवान के तेज से ही प्रकट हुई है। जिसे भगवान का तेजत्व प्राप्त हुआ है वह तेज बाहरी सम्पत्ति के रूप में मिला है।

इस वर्णन का तात्पर्य है परमात्मा सम्पूर्ण शक्तियों, कलाओं विद्याओं आदि के विलक्षण भण्डार है। मनुष्य में जो भी विशेषता आती है जैसे कवित्व शक्ति, वक्तृत्व शक्ति, लेखन शक्ति, अविष्कार करने की शक्ति, प्रेम, आदि अगर यह विशेषता भगवान में न होती तो मनुष्य में कैसे आती। **यह तो भगवान की विशेषता है कि सब कुछ देकर अपने को प्रकट नहीं करते।** जिससे मनुष्य मिली हुई, वस्तु, विशेषता को तो अपनी मान लेता हो पर जहाँ से वह मिली है उसको अपना नहीं मानता और कभी कभी तो ईश्वर की सत्ता को जानता तो है पर मानता नहीं है। अपने को नास्तिक कहता है अर्थात् जानता हूँ पर मानता नहीं हूं।

शक्ति जड़ प्रकृति में नहीं रह सकती, चिन्मय परमात्मा तत्व में ही रह सकती है। ज्ञान जड़ में नहीं रह सकता। क्योंकि जिस ज्ञान से क्रिया हो रही है वह जड़ में कैसे रह सकता है। अगर ऐसा माने कि सब शक्तियाँ प्रकृति में ही है तो यह मानना पड़ेगा कि उन शक्तियों के प्राकाट्य और उपयोग (सृष्टि रचना) आदि करने की योग्यता प्रकृति में नहीं है। जैसे कम्प्यूटर जड़ होते हुए भी अनेक चमत्कारिक कार्य सकता हो। परन्तु चेतन (मनुष्य) के द्वारा निर्मित, शिक्षित और संचालित हुए बिना वह कार्य नहीं कर सकता। कम्प्यूटर बनाया हुआ है, उसमें ज्ञान भरा हो किन्तु बिना संचालन के व्यर्थ है।

इस वर्णन का तात्पर्य है **कि जगत में कही भी असाधारण विभूति या ऐश्वर्य दिखता हो,** वहाँ हमें ईर्ष्या या द्वेष नहीं करना चाहिये बल्कि **वहाँ हमें ईश्वर के तेज का साक्षात्कार करना चाहिये।** विभूति का सम्मान करने से भगवान का ही सम्मान होता है और वह विभूति कुछ अंश में अपने भीतर जागृत होती है।

- मंजू गुप्ता

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

विनम्र अभिवादन,

मालवीय प्रकाश के पिछले अंकों में छपी रचनाओं से यह तो आपने आभास किया होगा कि लेखक (चाहे वह विद्यार्थी हों, शिक्षक हों अथवा संस्थान का कोई प्रशासनिक सदस्य) अपनी रूचि एवं सोच की कलम से बहुरंगी क्रियात्मकता को जन्म देते हैं, और उनकी यही विविधता पाठकों के मन को सम्मोहित कर बौद्धिक खुराक देती है। यह बिल्कुल ठीक वैसे ही है जैसे प्रकृति में भिन्न-भिन्न जीवों व पादप समुह का पाया जाना और यह विलक्षणता ही प्रकृति के अद्भूत सौंदर्य का कारण भी है और यही वैचारिक भिन्नता जीवन में संगीत भरती है।

जैसे प्रकृति हर पल अपना रूप बदलती है (अलहदा, हम अपनी सीमित दृष्टि से चाहे इस सूक्ष्म भेदों को पकड़ नहीं पाते हैं) वैसे ही मनुष्य में भी चेतना होने की वजह से उसमें आकार, रूप, रंग, सोच, आदतों, स्वभाव व संस्कार की विविधता पाई जाती है जो कि परिस्थितियों के आघात प्रतिघात से समायोजन के दौरान बदलती रहती है।

इसीलिये एक लेखक न केवल अपनी विशेष मौलिकता लिये होता है बल्कि काल व मन स्थिति में बदलाव की वजह से वह भिन्न-भिन्न रचनाओं को जन्म देने की काबिलियत भी रखता है।

संस्थान के हिंदी भाषा प्रेमी भावुक व प्रबुद्ध लेखकों की मौलिक अभिव्यक्तियों के साथ प्रस्तुत है 'मालवीय प्रकाश' का यह अंक। आपके सुझावों व मार्गदर्शन की अभिलाकांक्षी,

शुभकामनाओं सहित,

भवदीया,
डॉ. ज्योति जोशी

सम्पादक एवं आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
9413971604, 9549654852, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com
malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से...	1
महामना पं. मदन मोहन मालवीय एक ...	1
सम्पादकीय	1
ईश्वर का साक्षात्कार असाधारण योग्यतायें	1
कहानी 'उजला मन'	2
हम लोग एडवांस हो गए	2
जिन्दगी	2
मुझे लगता है	2
सफलता का मंत्र	3
कहानी पोस्ट	3
पर्यावरण दिवस	3
शक्ति स्वरूपा माँ पीताम्बरा	3
तुम्हारे मन का हाल	3
सम्बन्धों का मूल्य	4
सोशल मीडिया	4
नारी शक्ति	4
वक्त	4

गतांक से आगे.....

कहानी 'उजला मन'

आनंदी जब बेटे की कॉलोनी में उसके वाले विंग के तीसरे तल्ले पर बीसियों चक्करदार सीढ़ियां चढ़कर पहुँची, उसने फ्लैट पर ताला जड़ा पाया, यह सोचकर कि बेटा-बहू बाजार गए हैं और कुछ ही देर में आते होंगे, वह उसी तल्ले पर स्थित एक दूसरे फ्लैट की ओर बढ़ गई दरवाजे पर लगे घंटी के स्विच के बजाय जब उससे बल्ब जलने वाला स्विच दब गया, तो उसने हाथ से दरवाजा थपथपा दिया, दरवाजे पर आ गई औरत ने 'मां जी आप बहुत दिनों बाद आई, कहते हुए उसे अंदर बुला लिया, उस औरत ने ही बताया कि बेटा-बहू चार दिनों के लिए बाहर गए हैं, बहू की बहन के यहाँ किसी की शादी है।'

''बिरजू ने मुझे इस बारे में कुछ बताया नहीं था,'' आनंदी के स्वर में अपने बेटे के लिए शिकायत उभरी, लेकिन तुरंत ही उसने उस शिकायत उभरी, लेकिन तुरंत ही उसने उस शिकायत को गलत भी कर दिया, खबर देने का वक्त नहीं मिला होगा।

''हाँ मां जी, बड़े शहरों में बड़ी भागमभाग रहती है,'' औरत ने कहा,

''पिंकी के इम्तहान हो गए होंगे''

''एग्जाम्स?'' अभी कहां वो तो एक, सवा महीने बाद शुरू होंगे।

''बहू को चक्कर आते थे, अब तो नहीं आते हैं?'' आनंदी अपनों के बारे में सब कुछ जान लेना चाहता थी, यह जान लेना अपनों से मिलने का विकल्प भी था।

''शोभा एकदम ठीक है, उसे कोई परेशानी नहीं है।''

''बिरजू जब पिछली बार मुझसे मिलने आया था, उसे खांसी आती थी, अब ठीक है?''

''कल यहीं से नाश्ता कर गए हैं मैंने शोभा से बोल दिया था कि सुबह किचन में जाने का झंझट मत पालना, ब्रहजमोहन भाई साहब को मेरे सामने एक दफा भी खांसी नहीं, आई वैसी शिकायत होती तो सॉस मतलब चटनी वगैरह नहीं लेते।''

''बादाम में बड़े गुन हैं, मैंने बेटे-बहू सबको बादाम लेने की बात कही थी, लेते होंगे?''

माँ जी, जब आपने वैसा बोला है तो जरूर लेते होंगे?

माँ जी, जब आपने वेसा बोला है तो जरूर लेते होंगे, उस औरत की बारह तेरह वर्ष की लड़की कमरे में आ गई थी आनंदी को सोफे पर दोनों पैर समेटे बैठी देखकर वह हंसने लगी, औरत ने आंखों से उसे बरजा, फिर कहा, दादी को चाय तो बनाकर पिला।

''यह वैसी वाली चाय तो नहीं बनाएगी जिससे मेरी नींद नहीं आती?''

''नींद नहीं आती है जिससे?'' लड़की के चेहरे पर भौंचक्कापन खिंच आया।

''वो जिसे क्या नाम है, कापी बोलते हैं'' लगी, ''नहीं मां जी, यह आपकी पंसद वाली चाय बनाएगी, दूध ज्यादा, चीनी चटक''

आनंदी कॉफी को कापी कहती थी और जेनरेटर को जेनलेटल, ऐसा नहीं था कि वह 'फ' या 'र' को बोल न पाती हो, कुछ शब्द गलत बोलने की उसे आदत थी, टोके जाने पर सफाई देती थी, ''मेरे जमाने में ये चीजें थी कहाँ?''

घंटा भर बैठने और औरत से यह अनुरोध करने के बाद कि बिरजू के आने पर वह उसे बता दे कि अम्मा आई थीं और वह फुरसत निकाल कर बहू व पोती के साथ अम्मा से मिलने जल्द आए, वह उन्हीं चक्करदार सीढ़ियों से नीचे उतर आई।

हुआ फिर यह कि आनंदी जिस बस पर सवार हुई, आधी पौनी दूरी तय करने के बाद वह खराब हो गई आप मानेंगे कि यह कोई खास बात नहीं हुई, हर आदमी की अपनी जिंदगी में ऐसे हादसों से अकसर मुठभेड़ हो जाती है, जब काफी माथापच्ची करने के बाद ड्राइवर ने ऐलान कर दिया कि बस ठीक हो नहीं सकेगी, मुसाफिर उतर पड़े, कुछ नाराजगी प्रकट करतेह्ुए और कुछ यों ही चुपचाप अंधेरे को पनाह देने वाली शाम हो चली थी और सड़ क पर बत्तियां जल चुकी थीं आनंदी को अपने और बेटे के घर के बीच की यात्रा वैसे भी दो बसों स पूरी करनी पड़ती थी, आज खाते में एक बस और चढ़ जाएगी।

मुसाफिरों की एक टोली कुछ दूर सीधे चलने के बाद एक ओर मुड़ गई आनंदी, जो अपनी स्वभाव के अनुरूप छोटे- छोटे डग बढ़ा रही थी, वह भी उसी रास्ते पर मुड़ गई एक मुसाफिर को आनंदी को लेकर कुछ शक हुआ अपना शक सही पाकर वह बोला कि उसकी बस तो एक दूसरे स्टैंड से मिलेगी और फिर यह भी बताया कि वह पीछे लौटने के बजाय अब सामने वाली लेन से निकल जाए, इधर से उसे पास पड़ेगा।

उस लेन यानी गली में जाकर आनंदी फिर भटक गई वह सामने पड़ गए किसी आदमी से बस अड्डे का रास्ता पूछती और बताई गई दूसरी गली में कुछ दूर सही चलने के बाद फिर गलत दिशा में मुड़ जाती आनंदी को भटकते हुए कोई खास घबराहट नहीं हो रही थी, उसके अंदर कहीं यह इत्मीनान था कि वह जल्द ही सही रास्ता पाकर बस अड्डे पर पहुँच जाएगी और तुरंत मिल सकने वाली बस छूट गई होगी तो दूसरी मिल जाएगी, बसें देर रात तक चलती रहती हैं।

आनंदी तनावमुक्त मानसिकता की औरत थी, और अमूमन पुराने लोग होते हैं दुश्चिताएं या अनावश्यक आशांकाएं उसके पास टिकती नहीं थी, प्रतिकूल स्थितियों को वह पचाकर जल्द ही सहज हो जाती थी।

आनंदी का एक बेटा बंबई में भी था यह छोटा बेटा भी पिता की मृत्यु के बाद आनंदी को अपने पास रखने के इरादे से बंबई ले के गया था किंतु हफ्ता दस दिन में ही उसका मन उचटने लगा था बेटा-बहू सुबह अपनी-अपनी नौकरियों पर निकल जाते थे, दोनों पोते स्कूल चले जाते थे, बेटे ने अम्मा का मन लगाने के लिए तजवीज की कि पीछे वह टीवी खोल दिया करे, मगर एक तो उससे टीवी का खटका गलत-गलत दब जाता था, दूसरे परदे पर बेशर्मी ज्यादा आती थी फिर बेटा उसके लिए भजनों का कैसेट लगा कर जाने लगा, आनंदी पाती कि भजनों में बोल कम हैं, बाजों का शोर ज्यादा वह सोसायटी के दूसरे घरों में चली जाती और शाम को बेटे-बहू को बताती कि नंबर चौदह की बंगालिन के बच्चा होने वाला है और वह बच्चा अपने मायके में जनेगी, कि नंबर दस वाली के यहाँ जो धुलाई की मशीन है, उसे वह दहेज में लाई है, कि दकदम किनारे की लाइन में रहने वाली जिस औरत का लड़का पानी का इंजीनियर है उस इंजीनियर लड़के का अपनी लुगाई से मुकदमा चल रहा है, शादी को सिर्फ दो साल हुए है।

''माँ जी, वह औरत तो कन्नड़ बोलती है, आपने उसकी बोली कैसे समझ ली?'' बहू ने पूछा

''पहले नहीं समझी थी, फिर इशारों से समझ गई''

''यहाँ दूसरों के घरों में ज्यादा जाना ठीक नहीं समझा जाता है।''

''अच्छा, तभी सब लोग अपना दरवाजा दिन में भी बराबर बंद रखते हैं, खटखटाने पर ही खोलते हैं, वो भी पहले छेद से झांकेगे।''

आंनदी जल्द ही जाने के लिए कहने लगी थी, जब उसकी रट बढ़ गई, बेटे ने कहा कि दफ्तर से छुट्टी मिलने पर वह पहुँचा आएगा।

''मैं अकेली चली जाऊंगी''

''तू इतना लंबा सफर अकेली तय कर लेगी?''

''गाड़ी सीधी जाती है, यहाँ से बैठूंगी, वहाँ उतर जाऊंगी''

एक दिन बेटे ने आकर बताया कि उसने उसका टिकट खरीद लिया है और उसे अमुक दिन जाना है, भाई को फोन से इत्तला दे दी है।

''तब तो और भी मुश्किल नहीं रहेगा, इन कर तूने अकल का काम किया,'' आनंदी जिन शब्दों को गलत बोलती थी उनमें एक ''फोन'' भी था

गाड़ी चलते-चलते एक स्टेशन पर रुक गई थी, अभी सुबह हुई नहीं थी, पर होने में ज्यादा देर भी नहीं थी, आनंदी खिड़की से स्टेशन को ताकने लगी, बोरों के एक ढेर के पीछे नल या जहाँ कुछ लोग पानी भर रहे थे, आनंदी की अपनी बोतल का पानी खत्म हो चुका था जो सह-यात्री रात उतरकर उसकी बोतल भर लाया था, वह गहरी नींद सो रहा था, आनंदी नल की ओर खुद बढ़ गई, जैसे सब पानी ले रहे हैं, वैसे वह भी ले लेगी, अपना नंबर आने पर पानी भर कर जब वह लौट रही थी, गाड़ी रंगने लगी लोगों की हाँक पर वह चार-पाँच कदम दौड़ कर गाड़ी में चढ़ गई कुछ देर बाद डिब्बे में टिकट जाँचने वाला आया, उसने कहा कि बूढ़ी यह तो फस्ट क्लास का डिब्बा हे आनंदी को भी चढ़ने के बाद यह आभास हो गया था कि वह एक दूसरे डिब्बे में आ गई है और यह ऊँचे दरजे का है, आनंदी की पेश की हुई सफाई को टिकट चेकर ने बगैर किसी ना के स्वीकार कर लिया, मसखरी में यह भी कहा कि अब आगे का सफर वह फस्ट क्लास में ही उसकी जिम्मेदारी पर तय करे।

''नहीं बेटा, अगले स्टेशन पर मुझे मेरे वाले डिब्बे में पहुँचा देना दिल्ली में मेरा लड़का लेने आएगा मुझे अपने डिब्बे में न पाकर परेशान होगा।''

अगले स्टेशन पर आनंदी अपने डिब्बे में पाकर यों सहज भाव से बैठ गई थी जैसे उसके साथ कुछ खास घटा ही नहीं था।

आनंदी एक और शख्स के यह बताने पर कि वह सामने की गली में सीधी चली जाए और सौ कदम जाने के बाद दाहिने हाथ की गली उसे बस स्टैण्ड वाली सड़क पर पहुँचा देगी, जब उधर बढ़ रही थी कि एकाएक पानी गिरने लगा मौसम शाम से ही खराब था, मगर हवा चलने पर बादल छंट भी जाते थे, पानी यों तेज नहीं था लेकिन उसे धीमा भी नहीं कहा जा सकता था और जिस तरह वह मजे-मजे गिर रहा था उससे बेमौसम का भी नहीं लगता था।

आखिर पानी रूक ही गया, आनंदी भीगने से बचाने वाली जगह के नीचे से निकल कर गली में दोबारा चलने लगी, वह सही दिशा में ही बढ़ रही है, ऐसा पक्का करने कई नीयत से जब उसने फिर एक राहगीर से पूछा तो उसने संदेह प्रकट किया कि उसे अब बस मिल सकेगी, यह भी बताया कि जहाँ उसे जाना है वह स्थान वहाँ से काफी दूर है उसने आनंदी की सारी स्थिति जान कर फिर यह भी कहा कि न हो तो वह उसके यहाँ रूक जाए। ''बेटा, कोई भी तरकीब ऐसी नहीं हो सकती जिससे मैं अपने घर रात में ही पहुँच जाऊँ?''

''माँ जी, मान लो पुष्प विहार में आपका बेटा घर पर मौजूद होता और पानी गिरने लगता और वह आपको रोकता, तो आप क्या रूक नहीं जातीं?''

शेष अगले अंक में .....

जिन्दगी

जिन्दगी तुम एक किताब हो,
हर सवाल का जवाब हो,
कहने को तो वक्त हो, लम्हा हो
जियो तो हर पल हो, हर सांस हो
ज़िदंगी तुम प्यार हो, एहसास हो
पा लो तो सारा जहाँ हो, सारा आसमान हो
जिन्दगी तुम नदी हो, संगीत हो,
सुनो तो साज हो, हर धड़कन की आवाज हो
ज़िंदगी तुम कविता हो, छंद हो
गाओ तो उमंग हो, जीवन का तरंग हो
जिंदगी तुम सरस हो, सुधा हो
कवि की कल्पना हो, मधुमास हो
जिन्दगी तुम वर्षा हो, सावन हो
ओस की बूंदो की तरह पावन हो
जिन्दगी तुम सहर हो, शाम हो
जीवन हो नितांत हो

विवेक प्रकाश
(शोधार्थी)

संबंधों का मूल्य

बहुत चुनिंदा रहे दोस्तों के इंतखाब में
और जो बनाए तो कभी पड़े नहीं हिसाब में
ये और बात की जिनसे मिलती है हमारी फितरत
नहीं मिलती है उनको हमसे मिलने की फुर्सत
मगर ये अहसास औ एतबार पुख्ता है दिल में
जब भी अश्को ने पलकों का दामन छोड़ा है।
इन्हीं हथेलियों ने आके उन्हें थामा है।
मुलाकातों की कमी किसी शक की बाइस
ये रिश्ते तो दिल के है जरूरी इनकी नुमाइश
मुहब्बत का कर हर सूरत बड़ा रखा अना
इस तरहां दोस्ती को बचा कर रखा फना
हिसाब में सदा से कच्चे रहे है हम
तभी तो ये रिश्ते बचा के रखे हैं हम

-शैलजा पांडे

मुझे लगता है

मुझे लगता है, कि
जीवन को परिभाषित नहीं किया जा सकता
क्योंकि परिभाषा उसी को होती है, जिसको शब्दों की रेखा से सीमित किया जा सके,
मुझे लगता है, कि
जीवन के अनन्त गहराई तक जाया नहीं जा सकता
क्योंकि गहराई उसकी मापी जा सकती है, जिसका कोई आरम्भ बिन्दू हो।
मुझे लगता है कि
जीवन के अस्थिर और स्थिर वस्तुओं के रहस्य को जाना नहीं जा सकता
तभी सुझता है, जब कभी वह सुलझा हुआ हो।
मुझे लगता है कि
जीवन के इस अनन्तता में, विशालता में और तुच्छ समाजकीय विचार धाराओं, धर्म रीति रिवाजों में ऊर्जा को सीमित करना, प्रकृति, के किसी निम्न भाग को भी सम्बोधित नहीं करती है।
क्योंकि प्रकृति के नियमों से हम केवल प्रकृति में सुध हो सकते हैं, उसके गुलाम बन सकते हैं। प्रकृति रूपी गुफा से बाहर निकलकर शायद हम उसी असीमित रहस्य के दरवाजे नजदीक से देख सके।
मुझे लगता है ....

हम लोग एडवांस हो गए

हम लोग एडवांस हो गए
त्यौहार हमारे फिल्मी हो गए।
बड़े-बुजुर्ग अब अपमानित हो रहे
और हम कहते हैं कि हम विकसित हो रहे हैं।।

हमारी संस्कृति का कोई सम्मान नहीं
अब हिंदी हिन्दुस्तान नहीं।
हर जगह दरिंदे मिलते हैं
और हम कहते हैं कि हम विकसित हो रहे हैं।।

अरे! इस से अच्छा तो वो ज़माना था
जब साथ बैठकर होता खाना था।
खूब ठहाके लगाते थे, सुख दुःख सब बाँटते थे
परंतु आज!
आज आँखें चिपकी नजर आतीं है, फोन से।
कोई फेसबुक व्हाटसएप तो कोई
कैंडी क्रश खेलने में मशगूल है इत्मिनान से।
लोग पास रहकर भी दूर होने लगे हैं
और हम कहते हैं कि हम विकसित हो रहे हैं।
मूर्ख हैं वे लोग जो कहते हैं कि
भारतीय संस्कृति रूढ़िवादी सोच और अंधविश्वास में सिमटी है क्योंकि अनजान हैं वे इस बात से कि
आयुर्वेद जैसी पद्धति इसी धरती पर जन्मीं है।
इस धरती पर जनम लिया है
महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी जैसे वीरों ने
अब्दुल कलाम, होमी भाभा और रामन् जैसे अनमोल हीरों ने।
भारत पर शासन करने के लिए अंग्रेजों ने यह नीति अपनाई थी।
दूर करो इसे अपनी संस्कृति से नहीं तो ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी जुड़े नहीं फैला पाएंगी।
आज हमें जरूरत है जागरूकता फैलाने की भारतीय संस्कृति असल में क्या है
यह सबको समझाने की।
भारत को विकसित बनाने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना भारत विकसित होकर भी अपूर्ण हैं।

रितिक अग्रवाल - सिविल अभियांत्रिकी

भारत के अभिमान तुम्हारा, तुम भारत के अभिमानी,
पूज्य पुरोहित थे हम सबके, रहे सदैव समाधानी,
तुम्हें कुशल याचक कहते हैं, किंतु कौन सा तुम दानी,
अक्षय-शिक्षा सत्र तुम्हारा, हे ब्राह्मण- ब्रह्मज्ञानी।
स्वयं मदन मोहन की तुम्हें, तन्ययता है समा गई
कल्याणी वाणी, जन-जन के हित में धूनी रमा गई।
- मैथिली शरण गुप्त

सफलता का मंत्र

संतुष्ट प्राणी अपने आप में एक सफल प्राणी होता है। और सफलता वो कुंजी है जिसे हर प्राणी हासिल करना चाहता है। बात चाहे एक छोटी सी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की हो, या बहुत बड़ी पर्वत श्रृंखला को पार करने की परन्तु सफलता जब तक हाथ नहीं आती, तब तक ना रूह को सुकून मिलता है ना मन को चैन।

इसका सीधा व सरल शब्दों में एक ही तात्पर्य है कि हम सफलता के पीछे हर वक्त पागल है। कोई अपने परिवार के लिए सफल होना चाहता है, तो अपने प्यार के लिए कोई सिर्फ अपने स्वयं के स्वप्नों के लिए सफल होना चाहता है तो कोई दूसरे की आँखों और चेहरे पर खुशी देखने के लिए सफल होना चाहता है। मगर हो उस सफलता की दौड़ में हर किसी का मकसद किसी आगे चलने वाले को सिर्फ पीछे छोड़ना होता है। जो कि हमारी जिंदगी का आखरी मकसद नहीं होना चाहिए। वास्तिविकता ये है कि हमें अपने आप को ऊँचा दिखायें की आदत हो गई है। हम सिर्फ ये चाहने लगे है कि कोई हमसे किसी भी दौड़ में आगे नहीं निकलना चाहिए और शायद इस वजह से हम वास्तविक सफलता का अर्थ भी भूल चुके हैं।

हमारी वास्तविक सफलता जीवन में एक दूसरे को पीछे छोड़ आगे निकलना नहीं बल्कि अपनी आत्मसंतुष्टि होनी चाहिए। हमारे माता-पिता की नजर में हमारा वजूद एक संतुष्ट प्राणी की तरह का होना चाहिए। जिस दिन हमें ये पता जाऐगा कि हम अपने आप से संतुष्ट है, उस दिन चाहे हम दुनिया की नजर में कुछ भी नहीं हो, परन्तु खुद के लिए बहुत कुछ है, उस दिन हमें सफल होने से कोई रोक नहीं सकता। एक छोटी सी चींटी एक छोटे से दाने को दीवार पर चढ़ाने के लिए सौ-सौ बार असफल होती है, परंतु जब तक वो अपने आप की मेहनत से संतुष्ट नहीं हो जाती तब तक लगातार चढ़ती रहती है। वो ना अपनी संगिनियों की चिंता करती है। ना उनसे आगे निकलने की होड़ करती है। ये उसका सिर्फ जज्बा ही नहीं अपितु आत्मसंतुष्टि का पहला कदम है।

आज हर इंसान अपनी जिंदगी में मुकेश अंबानी बनना चाहता है। परन्तु उसमें ना तो अंबानी जितना सब्र है ना ही अपने कार्य से संतुष्टि। उसे गाँधी जी जैसी समाजसेवा तो करना है परंतु उनके जैसी सहनशीलता नहीं रखनी आती।

एक मिट्टी के घड़े को भी उपयोगी बनने के लिए आग में पकने की कठिन परीक्षा देनी पड़ती है, तो हे प्राणी तूभी तो उस मिट्टी से बना एक पुतला ही है, थोड़ा सा तो जीवन में परिपक्व होना ही पड़ेगा ना।

वास्तव में हम अपने आप से भी झूठ बोलना सीख चुके हैं। जब नौकरी लग जाती हे, तो अपनी इच्छा के क्षेत्र में पदस्थापन की सोचते हैं, जब पदस्थापन हो जाता है, अधिक आर्थिक लाभ की सोचते है, मगर फिर भी हमारी क्षुधा शांत नहीं होती जबकि लोगों के सामने अपने आप की सफलता की झूठी ढींगे हाँकते रहते हैं। जब तू अपनी वास्तविकता से संतुष्ट नहीं, तो क्यों सफलता का दिखावा करता है।

सफलता सिर्फ मेहनत करके आगे बढ़ना ही नहीं अपितु उस मेहनत को सहेजकर सही वक्त पर उपयोग में लेने की कला है ताकि हम संतुष्ट हो सकें।

कोई कहता है यार मैं बार बार असफल हो जाता हूँ। अरे एक बार दिल में अपनी मेहनत से संतुष्ट होकर तो देख सफलता खुद तेरे कदम ना चूम ले तो कहना एक बार सच्चाई के दिये की रोशनी फैलाकर तो देख, फिर तेरा दिल खुद तुझे वाह-वाह ना कह दे तो कहना।

हमने तो तारीफों के पुल बाँधे होंगे बनावटी कितने ही तू बनावट से बाहर निकलकर तो देख सच्ची सफलता ना मिल जाऐ तो कहना।

सब लोग कहते हैं, अगर हम अपने आप को ही संतुष्ट करने में लगे रहेंगे तो लोग क्या कहेंगे दोस्त क्या कहेंगे। अरे पगले माता-पिता की खुशी तो तेरी खुशी में छिपी है। पर हो अगर तू सिर्फ हाथ पर हाथ रखे ही बैठा रहेगा और फिर कहे कि मैं सिर्फ सोने में संतुष्ट हूँ, तो तू फिर दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख होगा।

नेमीचन्द मावरी
शोधार्थी रसायन शास्त्र

कहानी- पोस्ट कार्ड

वे हमारे बीएससी में हिन्दी के आचार्य थे श्रीमान् श्रीनारायण शर्मा। हिंदी विषय वैसे तो एक विशेष विषय के रूप में हमें पढ़ाया जाता था किंतु शर्मा सर की कक्षा इतनी रोचक होती थी कि सभी विद्यार्थीयों की पूर्ण उपस्थिति रहती थी। उसका एक कारण तो था उनकी हर विद्या पर अच्छी पकड़ चाहें वो गद्य हो या पद्य सुनने व समझने वालों को मंत्र मुग्ध कर देता था। ऐसा प्रतीत ही नहीं होता कि कक्षा चल रही है। साथ ही दूसरा कारण था उनका दर्शन ज्ञान, जो जीवन के तथ्यात्मक पहलुओं से जुड़ा होता था। कभी तो ऐसा लगता था कि ये कक्षा बस चलती ही रहे।

द्वितीय वर्ष में हिंदी विषय नहीं होता था किंतु कभी हमारी कोई ''क्लास'' नहीं होती थी तो हम तीन चार मित्र उनकी कक्षा में पीछे जाकर बैठ जाते थे। उनके अध्ययन की विद्या का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि कॉलेज में जहाँ खाली पीरियड्स में बच्चे चले जाते हैं वहाँ अपनी कक्षा से नीचे के दर्जे में कुछ लोग बैठ कर कुछ सुनना चाहते हैं।

हमारे तृतीय वर्ष में आते आते शर्मा सर की सेवा निवृत्ति हो गयी। हमें तीन चार मित्रों को बहुत दुःख हुआ क्योंकि उनसे लगाव जो हो गया था किंतु उनके दिलासा देने पर की हम उनके घर आ जा सकते हैं हमें बहुत राहत महसूस हुई । हम महीने में समय ले कर हम उनके घर चले जाया करते थे।

समय गुज़रता गया मेरे सभी साथी जयपुर से बाहर अपनी अपनी नौकरी पर चले गये बस मैं ही रह गया।

कुछ दिनों तक मेरा शर्मा सर के जाना नियमित था किंतु कालान्तर में भी अपनी नौकरी में व्यस्त हो गया।

सर की एक स्नेह संबंधों को निभाने की आदत थी कि वे हम सभी के जन्मदिन पर शुभाशीष भरा पोस्टकार्ड भेजते थे, ये उनका नियमित क्रम था। उनके इस आशीर्वचनों के साथ्ा कुछ हिदायत भरा जीवन का आदर्श भी अंकित होता था। ये पोस्टकार्ड हमारे संकलन का हिस्सा हुआ करता था। और सभी को अपने अपने जन्मदिन पर इन आशीर्वचनों की प्रतीक्षा रहती थी।

अपनी व्यस्तताओं के कारण एक बार लंबे समय तक मेरा उनके यहाँ जाना संभव नहीं हो सका। इसी बीच मेरा जन्मदिन आया किन्तु 5 वर्षों में यह पहला अवसर था कि इस बार मुझे उनके आशीर्वनों का उपहार नहीं मिला, मुझे कुछ अजीब सी बेचैनी भी महसूस हुई। इसी बीच जब मेरा मित्र राजीव जयपुर आया जो हमारे ही ग्रुप का सदस्य था और उसने ने भी यही उलाहना भरी व्यथा मुझे से कही क्योंकि इस बार उसे भी उसके जन्मदिन पर शर्मा सर के आशीर्वाचनों का उपहार नहीं मिला था। हमारी आपसी बातचीत में राजीव तर्क था कि हमने भी तो सर के लगभग जाना बंद ही कर दिया तो हो सकता है वे भी हमें भूल गये हों, किन्तु उसके इस उत्तर से मुझे संतुष्टी नहीं हुई लेकिन क्या करता मुझे भी उसके तर्क से सहमत होना पड़ा। इसके बाद मेरी हिम्मत पुनः सर के घर जाने की हिम्मत भी नहीं हुई क्यांकि एक वर्ष से भी अधिक का समय व्यतीत हो चुका था।

एक दिन मुझ को उनका पोस्टकार्ड मिला :

''मेरे प्रिय शिष्य, अचरज का विषय है कि एक लंबे समय के बाद भी आपको अपने सर'' की याद नहीं आई संभवतः इस वजह से कि इस बार आपको आपके जन्म दिन पर मेरा स्नेह नहीं मिल सका पर क्यों? आपने यह जानने का प्रयास भी नहीं किया। आप, राजीव, मुकेश संजय व सभी अन्य प्रिय जन सदा सुखी रहें सबकी बहुत दिनों से याद आ रही थी। शेष शुभ आपका श्री नारायण।

शाम के छः बजे थे। मैंने पत्र पढ़ते ही साइकिल उठाइ और चल पड़ा उनसे मिलने। दरवाजे पर घंटी बजाने पर उनके पौत्र ने दरवाजा खोला, पूछने पर पता चला कि श्री नारायण सर काफी समय के बाद बीमारी से ठीक होकर घर वापस आये हैं। इस अन्तराल में उनकी स्मृति भी प्रभावित हुई थी पर अब वे ठीक है।

उनसे सामना होते ही मेरी रुलाई फूट पड़ी मैं तो मन में पता नहीं किस प्रकार से सोचता रहा और मैंने ही क्यों नहीं उनकी सुध ली इसका भी मुझे अफ़सोस हो रहा था। उनके निश्छल व अटल स्नेह ने मेरे सारे अभिमान व मन में उपजे सभी उल्टे तर्कों को तोड़ दिया था। उन्होंने मुझे अपने सीने से लगा लिया, जैसे वो मेरी ही प्रतीक्षा में थे, और फिर कहने लगे कि मुझे पता था आप समय मिलते ही चले आओगे।

घर के सारे सदस्य व आगंतुक यह देख कर चकित थे कि आखिर ये ऐसा कौन आ गया जिनके आते ही सर ठीक लगने लगे और प्रसन्न हो गये।

पता नहीं ये कौन सा रिश्ता था जिसने मुझे रिश्ते निभाने की नयी सीख दी।

आज वो इस दुनिया में नहीं है किंतु उनके परिवार वाले सदैव हर मांगलिक अवसर पर मुझे बुलाते रहे।

अंशु सक्सैना, प्रशिक्षण एवं नियोजन विभाग

पर्यावरण

खामियाजा भुगतना पड़ेगा प्रकृति से खिलवाड़ का।
सामना करना पड़ेगा कभी भूकंप का तो कभी बाढ़ का।

गर्त की ओर ले जा रही है ये आधुनिक विकास की गाड़ी।
जानबूझकर भी मार रहे हैं हम अपने पैरों पर कुल्हाड़ी।

आर्थिक विकास का आधार है कृषि, वाणिज्य और गौ रक्षण।
कारखाने खोले के क्या करेंगे आप नट और बोल्ट का भक्षण?

जरा जानें क्या मूल कारण है प्रकृति के हनन का।
बहुत महत्वपूर्ण विषय है आज करने को मनन का।

श्रीकृष्ण ने बनाई प्रकृति तरीका भी बताया प्रयोग का।
भ्रमित मानव समझ बैठा इसे एक जरिया इंद्रिय भोग का।

भगवान की ये प्रकृति तो क्यों ना करें भगवान की ही सेवा।
भगवान भी खुश रहेंगे और हमको भी मिलती रहेगी मेवा।

पर्यावरण दिवस तक ही नहीं बल्कि मरण दिवस तक रहे याद।
पालन करें प्रकृति के नियमों का विनती करता दास कृष्णा पाद।
'कृष्ण पाद दास'

शक्ति स्वरूपा माँ पीताम्बरा

पूरे भारत में जगह-जगह सिद्ध मन्दिर, सिद्ध स्थान, सिद्ध मजार पाई जाती है। कोई शहर कोई गाँव ऐसा नहीं है जहाँ के लोग किसी न किसी स्थान को सिद्ध करने की मान्यता न देते हो हर स्थान हर जगह कहीं शिवजी का मन्दिर कही माता का तो कही भगवान श्री राम का तो, कही श्री बजरंग बली का मंदिर स्थापित है।

कुल मिलाकर कहा जाये तो यह बात सामने आती है कि पूरे भारत में अगर दुष्टों की संख्या अधिक है तो परमात्मा से डरने वालों की संख्या भी कम नहीं। पापों से बचने के लिए मंदिरों में दान-धर्म करके अपने पापों को कम करते हैं। इन सब की व्यवस्था प्रकृति ही कर देगी, तथा प्रकृति ही इन पापियों का नाश कर देगी।

जीवन के अनके वर्षों से हृदय में संचित अभिलाषा की पूर्ण होने की कल्पना कितनी रोंमाचकारी हो सकती है। इसका अनुभव मुझे दतिया पीठ के द्वार पर पहला कदम रखते ही हो गया। पूरा का पूरा प्रांगण माँ के बीज मंत्र ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानाम वाचं मुखम पदम स्तम्भय स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिम विनाशय ह्री ॐ स्वाहा मंत्रोच्चार की ध्वनि से अल्हादित और ऊर्जावान हो जाता है। जगह-जगह पर बैठकर लोग मंत्रों का पाठ कर रहे है। जैसे कि एक वृहद् तपोवन हर कोने में दिव्यता की अनुभूति और इस सबके बीच पीतांबरा माई के दर्शनों से हृदय स्पर्शी अनुभव मेरे जीवन का चिर-स्वप्न पूरा होने जैसा था।

माँ के शक्ति के अनेक रूप है कही दुर्गा, काली, कही चामुंडा तो कही भैरवी तो कही सीता तो कही राधा के रूप में पूजा की जाती है। साधक जिस रूप की गुण साधना करता है वैसे ही गुण की प्रबलता हो जाती है साधक में।

माँ के शक्ति का एक रूप है- माँ पीताम्बरा या बगलामुखी माई। आपका जन्मदिन अक्षय तृतीया के दूसरे दिन पूरे धूम-धाम से मनाया जाता है।

माई के इसी रूप की साधना, रावण, अर्जुन, अश्वत्थामा आदि महान योद्धाओं ने की। माई के इस रूप के साधक बहुत कम है। माई के इस रूप में मंदिर भी भारत में बहुत कम है। माँ पिताम्बरा का मात्र एक ही मंदिर ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित महाभारत युगीन दतिया मध्य-प्रदेश जिसकी स्थापना 1935 में अखण्ड ब्रह्म संत स्वामी जी महाराज ने की जो कभी श्मशान हुआ करता था। दतिया नाम महाभारत में देत्या वक्र के नाम से उल्लेख है। ऐसी मान्यता है कि द्रोण पुत्र अश्वत्थामा चिर-जीवित होने के कारण आज भी इसी मंदिर में पूजन करने आते हैं। इसी मंदिर परिसर में भगवान आशुतोष का वन खंडेश्वर लिंग रूप भी है जो भारत सरकार के पुरावत्व विभाग की धरोहर है। पुरातत्व विभाग ने भी इस लिंग को लगभग 5000 वर्ष पुराना प्रमाणित किया है।

माई के इस मंदिर में आज भी न जाने कितने श्रद्धालु अपनी विषम समस्याओं, झगड़ों मुकदमों के सामाधान के लिए डाक द्वारा पत्र लिखकर मंदिर को भेजते है पता लिखते हैं - न्यायालय पूजनीय माई महाराज श्री 1008 पीताम्बरा पीठ दतिया, मध्य प्रदेश।

वर्ष 1962 भारत चीन के आक्रमण के समय भारत के तत्कालिक प्रधानमंत्री पडित श्री जवाहर लाल नेहरू ने श्रद्धा माता के सलाह पर स्वामी जी महाराज को चीन के हमले के बारे में बताया गया। स्वामी जी ने कहा पुत्र में तो बस माई से प्रार्थना कर सकता हूँ बाकी मेरे बस में कुछ भी नहीं है। पडित नेहरू जी से उनकी जेब से प्राप्त धन से यज्ञ की सामग्री मंगाई गई पीली सरसों, पीले फूल, देशी घी हवन सामग्री हरसिल आदि। पंडित नेहरू जी को रात्रि तक रूकने का आदेश दिया गया पूर्ण व्यवस्था करके नौ वेदिया बनाकर पूर्ण विधि विधान से शुभ मुहूर्त में स्वामी जी ने पंडित नेहरू को यजमान बनाकर यज्ञ प्रारम्भ करवाया। यज्ञ में कुछ आहुतियाँ देने के बाद पंडित नेहरू को विदा कर दिया गया। लेकिन महायोगी स्वामी जी नौ दिन रात लगातार यज्ञ वेदी पर बैठे रहे यज्ञ होता रहा। नौ दिन बाद यज्ञ का समापन होना था जिस क्षण यज्ञ में अंतिम आहुति डाली जा रही थी उसी समय संयुक्त राष्ट्र संघ का संदेशा पंडित नेहरू को मिला चीन ने आक्रमण रोक दिया और चीन की फौजे बिना किसी राजनीतिक दवाब के पीछे हट गई। आज तक यह रहस्य ही है कि चीन ने जीता हुआ हजारों वर्ग कि.मी. क्षेत्र क्यों खाली कर दिया। आज भी अन्तराष्ट्रीय स्तर पर इस प्रश्न का कोई उत्तर स्पष्ट नहीं है। मेरी तरह न जाने कितने लोग यही मानते है कि ये देवी माई की कृपा से ही संभव हो सका। आज भी मंदिर परिसर में वह स्थान जहां यज्ञ हुआ था लोहे के सरियों के जाल से ढका हुआ है। एक छोटा सा साधारण सा बोर्ड लगा है - इस स्थान पर भारत पर चीन के आक्रमण के समय यज्ञ किया गया था।

जीवन में एक बार माई के दर्शन का प्रसाद, पवित्र मन से बिना किसी भी खास वजह या कामना के करने पर निश्चित रूप से हृदय में बार-बार दर्शन करने की कामना जागृत हो। वेदों में माँ के इस स्वरूप का वर्णन मिलता है। माँ अपने साधकों के शत्रुओं का स्तंभन कर देती है। हमारा अंहकार, क्रोध और अविवेक शत्रुओं के रूप में हमारे अंदर विद्यमान है, माई की उपासना और साधना से हम अपने सम्पूर्ण विकास के लिए इन शत्रुओं का नाश कर सकते है और इसके अतिरिक्त बाह्य शत्रुओं के विनाश के लिये तो हम माँ के आश्रम में जा ही सकते हैं।

पडित नेहरू की तरह वर्तमान प्रधानमंत्री भी माँ पिताम्बरा के दरबार में अर्जी लगाकर तथा माई के नाम व बीजमंत्रों का शुद्ध उच्चारण सहित जाप व हवन करवायें तो भारत के विरूद्ध बढ़ रहे आतंकवाद, माओवाद, आंतरिक कलह के साथ-साथ महिलाओं पर हो रहे अत्याचार पर अंकुश लगाया जा सकता है। दतिंया के स्वामी जी से दीक्षित पंडित सी.एल. मिश्र द्वारा स्थापित माई का एक दिव्य व पूर्ण चैतन्य मंदिर मालवीय नगर जयपुर में माँ बगुलामुखी साधना केन्द्र के नाम से विख्यात है।

- नरेन्द्र कुमार तिवाड़ी
(लेखा शाखा विभाग)

तुम्हारे मन का हाल

जरा सुन भी लो अब, जो है मेरे मन का हाल
गालिब नूर सी आंखों में कैद है वो मेरे ख्याल
कफने दर पर पूछने को आओ,
कोई तो मुझसे ये सवाल
कैसे हो अब कैसा है तुम्हारे मन का हाल
इम्तिहान जिदंगी का, आज भी कर्ज चुका रहे है
देखले तुम्हें कोई हमारे सिवा
सो बंदूक लिए हम चले आ रहे हैं
ले अब बना ले आशिक तु उसे,
जिसे गोली मारे हम जा रहे हैं,
तेरी रूबरू को नजरअदांज करते
मेरे मिज़ाज ऐ शोकत अर्ज फरमा रहे है
बेसुहाना मौसम बड़ा वो, जिदंगी के वो बेबस सवाल गोली है
मारी तुमने किसी को
इस बात का कबसे मलाल
कबरे - तकलूफ दे गए, नजरों से हमारे ये आशिक कलम
अब जो कब्र पर बैठे हैं, उसकी,
पूछते है तुमसे एक सवाल कैसे हो तुम अब
और कैसा है तुम्हारे मन का हाल
योगेन्द्र सिंह

पृष्ठ 2 का शेष .....

मदन मोहन मालवीय

नवीन सभ्यताओं के सभी सद्गुणों का समन्वय हो, ओर जो अपनी शिक्षा द्वारा भावी भारत के पुनर्निर्माण में पुरुषों से पूर्णरूप से सहयोग कर सकें।'' सन् 1911 में गोखले के विधेयक पर बोलते हुए उन्होंनें कहा था, ''समाज के आधे भाग को ज्ञान की ज्योति से तथा उस उत्कृष्ट जीवन से जो ज्ञान द्वारा सम्भव है, वंचित रखना बहुत दुःखदायी बात होगी।''

उनके विचार में विद्यार्थियों का चरित्रगठन शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य है। सज्जनताविहीन ज्ञान, उनकी दृष्टि में, निरर्थक है। वे जीवनोत्कर्ष और राष्ट्र की उन्नति, दोनों के लिए चरित्रगठन को बौद्धिक तथा व्यावसायिक विकास से कहीं अधिक अवश्यक समझते थे। उनकी तो धारणा थी कि ''पारस्परिक सद्भाव तथा सहयोग के बिना व्यावसायिक उन्नति हो ही नहीं सकती और जीवन में सद्भाव और सहयोग को विकसित करने के लिए चरित्र का गठन आवश्यक है।'' उनके विचार में चरित्र ही मनुष्य को बनाता है, सदाचार मनुष्य का परम धर्म है, उसकी रक्षा मनुष्य का पुनीत कर्तव्य, तथा उसकी वृद्धि उसका परम पुरुषार्थ है। मालवीयजी का कहना था कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को आचार के ही शासन से सदा शासित तथा प्रभावित रहना चाहिए, तभी उनमें विश्वास, मृदु भाषण तथा व्यवहार की सच्चाई और सद्गुणों का विकास हो सकता है।

आचारण की शुद्धि, पुष्टि और परिपक्वता के लिए मालवीयजी धर्म, नागरिकता और नैतिकता की शिक्षा आवश्यक समझते थे। उनकी धर्म की व्याख्या नैतिकता से ओतप्रोत और नागरिकता से समन्वित थी। वे देशभक्ति को धर्म का महत्वपूर्ण अङ्ग स्वीकार करते थे। उनकी नैतिकता बहुत अंशों में धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित नैतिक आदेशों पर आश्रित थी। आत्मोपम्य व्यवहार तथा निःस्पृही लोकसेवा उसके सर्वोत्तम सद्गुण थे, और ये दोनों श्रीमद्भगवत्गीता द्वारा प्रतिपादित समत्व, निष्काम सेवा तथा ईश्वरार्पण सत्कर्म के सिद्धान्तों पर आधारित थे। उनकी नागरिकता की व्याख्या लोकतांत्रिक थी। वह पाश्चत्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित लोकतांत्रिक सिद्धान्तों पर आधारित थी। उनके विचार जड़ता से रहित और आधुनिकता से प्रभावित और समन्वित थे। उनकी मूलधारणाएें निर्विवाद थी। सद्भावनाओं से अनुप्राणित, सदाचार से विभूषित जीवन ही आत्मोत्कर्ष और जनकल्याण का उत्तम साधन हो सकता है। देशप्रेम की शिक्षा ही राष्ट्र का उद्धार कर सकती है। निःस्पृह देशभक्त ही राष्ट्र की सच्ची ठोस सेवा कर सकता है। लोकतांत्रिक नागरिकता के मूल सिद्धान्तों पर आधारित लोकतांत्रिक चरित्र और व्यवहार ही लोक तन्त्र को स्थायी, सुदृढ़ और जनोपयोगी बना सकता है।

मालवीयजी के विचार में मानव के सर्वांगीण विकास तथा उत्कृष्ट आनन्दमय जीवन के लिए विकासोन्मुखी व्यापक शिक्षा तथा चरित्रगठन के साथ-साथ स्वस्थ निर्मल जीवन, ज्ञान-विज्ञान का विस्तार, ललित कलाओं के प्रति अभिरूचि, तथा सुख साधन की भौतिक सुविधाऐं भी आवश्यक है। स्वास्थ्य की रक्षा, शारीरिक शक्ति की पुष्टि वे मानव का पुनीत कर्त्तव्य मानते थे। और शरीर की रक्षा और पुष्टि के लिए ''युक्त आहार विहार'' तथा ''ब्रह्मचर्य'' और व्यायाम आवश्यक समझते थे। वे चाहते थे कि प्रत्येक विद्यार्थी पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करे, तथा नित्य नियमित रूप से व्यायाम करे। उनका कहना था कि ''ब्रह्मचर्य ही हमें यह आत्मबल देता है जिसके द्वारा हम संसार में सब कष्टों और बाधाओं का साहस के साथ सामना कर सकते हैं।'' वे प्रत्येक विद्यालय में व्यायाम के साधनों का समुचित प्रबन्ध आवश्यक समझते थे। उनके विचार में कतिपय प्राचीन और अर्वाचीन क्रीड़ा और व्यायाम के उपकरण स्वास्थ्य की रक्षा और शरीर की पुष्टि के साथ-साथ मनोरंजन तथा पारस्परिक सद्भाव और सहयोग की क्षमता की वृद्धि के उत्तम साधन भी बन सकते हैं, और उनका प्रबन्ध विशेष रूप से वांछनीय है।

मालवीय जी यह भी चाहते थे कि विद्यालयों में संगीत, काव्य, नाट्यकला, चित्रकला, वास्तुकला तथा मूर्ति-कला आदि ललित कलाओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध हो, और उनमें से कम से कम किसी एक कला में विद्यार्थी अवश्य ही दिलचस्पी ले। उनके विचार में कला विहीन जीवन शुष्क और नीरस है, जबकि ललित कलाओं का ज्ञान, उनको परखने की क्षमता, तथा शुद्ध भावनाओं के साथ उनके प्रति अभिरूचि, और समयनुकूल उनका अभ्यास जीवन को सरस और आनन्दमय बनाता है।

मालवीयजी को अपने पूर्वजों की सांस्कृतिक देन पर गर्व था। वे चाहते थे कि भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य, दर्शन तथा अन्य भारतीय विद्याओं के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसन्धान का समुचित प्रबन्ध हो, तथा सब विद्यार्थियों को उनकी रूपरेखा की जानकारी करायी जाय। उनकी धारणा थी कि वह शिक्षा पद्धति अपूर्ण ही नहीं, निरर्थक और हानिकर है जिसके द्वारा नवयुवक को अपने देश और समाज की बौद्धिक समृद्धि की ठीक

ठीक जानकारी न हो सके। उनके विचार में वह व्यक्ति क्या शिक्षित है, जिसका जीवन अपने पूर्वजों के सद्गुणों से अनुप्राणित नहीं, जिसे अपने पूर्वजों की महत्वपूर्ण देन का कोई ज्ञान नहीं, जिसे अपने देश के इतिहास की सही-सही जानकारी नहीं, जिसमें अपने जीवन को जनता से आत्मसात करने की क्षमता नहीं। यद्यपि मालवीयजी भारतीय वाङ्मय का अध्ययन अध्यापन, पूर्वजों की कीर्ति की रक्षा और पुष्टि सामाजिक उन्नतिके लिए आवश्यक समझते थे, उनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण, उनकी बौद्धिक मान्यताएँ व्यापक और उदार थी। वे ज्ञान को किसी विशिष्ट जाति या देश की बपौती नहीं समझते थे। वे यह कभी नहीं मानते थे कि हमारे पास सब कुछ है, हमें दूसरों से कुछ लेना नहीं है। वे स्वीकार करते थे कि हमारे पूर्वजों की तरह दूसरे देश के विद्वानों ने भी अपनी प्रतिभा और योग्यता से संसार को अलंकृत किया है। सब विद्वानों का आदर तथा ज्ञान का आदान-प्रदान वे मानव प्रगति और राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्ययक समझते थे। वे दूसरे देशों के विद्वानों के युक्तियुक्त समाजोपयोगी विचारों को ग्रहण करने को सदा तैयार रहते थे। वे मनु, भीष्म, वशिष्ठ, शुक्र आदि विद्वानों के इस विचार से सहमत थे कि हमें अपने गुरुओं और पूर्वजों के सद्गुणों को ग्रहण करते हुए सब विद्वानों के युक्तियुक्त विचारों को, शुभ ज्ञान को विनयपूर्वक स्वीकार करना चाहिए, उनका अध्ययन करना चाहिए।

इस तरह मालवीय जी भारतीय विद्यार्थियों के लिए प्राचीन भारतीय दर्शन, साहित्य, संस्कृति और अन्य विद्याओं के साथ-साथ अर्वाचीन नीतिशास्त्र, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, विधिज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन आवश्यक समझते थे। वास्तव में वे इन सब विषयों के प्राचीन भारतीय और अर्वाचीन पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन आवश्यक समझते थे। वे विश्वज्ञान का समन्वय, तथा विश्व के विद्वानों के सहयोगात्मक प्रयासों को मानव उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे।

मालवीयजी विज्ञान के प्रयोगात्मक और व्यावहारिक पक्ष के बहुत प्रशंसक थे। उन्हें इस बात की खुशी थी कि विज्ञान के विद्यार्थियों को शब्द प्रमाण के आधार पर पाठ्यपुस्तकों द्वारा ही विज्ञान की शिक्षा नहीं दी जाती, बल्कि प्रचलित सिद्धान्तों और संचित अनुभवों की सच्चाई प्रयोगशाला में वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध करवायी जाती है, और निजी अनुभवों द्वारा उन सिद्धान्तों को संशोधित तथा नये सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है। वे हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विलियम जेम्स से सहमत थे कि इस विधि से 'लेबरेटरी वर्क और वर्कशाप प्रेक्षण का अभ्यास, यथार्थता और अस्पष्टता के अनतर का ज्ञान, तथा प्रकृति की पेचीदगी की और वास्तविक तथ्य के सब शाब्दिक विवरणों की गलतियों की पूरी जानकारी पैदा करते है, जो एक बार बुद्धि मे बैठ जाने पर आजीवन जम जाता है। ये यथार्थता प्रदान करते है। ये ईमानदारी देते हैं। ये आत्म-निर्भरता का अभ्यास (आदत) पैदा करते हैं। ये विद्यार्थी को उसके युग के स्वतः प्रसूत हितों से बहुत ही उचित ढंग पर संलग्न कर देते हैं। वह उसमें तल्लीन हो जाता है और उस पर टिकाऊ और गहरा प्रभाव डाल देता है। उस युवक की तुलना में, जो इस ढंग से पढ़ाया जाता है, वह नवयुवक जो केवल पुस्तकों पर पढ़ाया लिखाया गया है, जीवन में वास्तविकता से कुछ दूर रहता है। वह एक तरह से घेरे से बाहर रहता है और इसका अनुभव करता है, और बहुधा उदासी और चिन्ता से पीड़ित होता है, जिससे वह अधिक वास्तविक शिक्षा द्वारा बचाया जा सकता था।

...........शेष अगले अंक में

नारी शक्ति

औरत सब संभाल लेती है ...
सिर्फ महसूस किया जा सकता है ..
वो औरत दौड़ कर रसोई तक
दूध बिखरने से पहले बचा लेती है।
समेटने के कामयाब मामूली लम्हों में,
बिखरे ख्वाबों का गम भुला देती है।
वक्त रहते रोटी जलने से बचा लेती है,
कितनी हसरतों की राख उड़ा देती है।
एक कप टूटने से पहले सम्हालती है,
टूटे हौंसलों को मर्जी से गिरा देती है।
कपड़ों के दाग छुड़ा लेती सलीके से,
ताजा जख्मों के हरे दाग भुला देती है।
कैद करती अरमान भूलने की खातिर
रसोई के बंद डिब्बों में सजा लेती है।
नाजुक लम्हों के अफसोस की स्याही,
दिल की दीवार से बेबस मिटा लेती है।
मेज कुर्सियों से गर्द साफ करती,
चंद ख्वाबों पर धूल चढा लेती है।
सबके सांचे में ढालते अपनी जिंदगी
हुनर बर्तन धोते सिंक में बहा देती है,
कपड़ों की तह में लपेट कुछ शौक
अलमारी में खमोशी से दबा देती है।
अजीज चेहरों की आसानी की खातिर,
अपने मकसद आले में रख भुला देती है।
घर भर को उन्मुक्त गगन में उडता देखने
अपने सपनों के पंख काट लेती है।
हाँ ... हर घर में एक औरत है,
जो बिखरने से पहले ही सब सम्हाल लेती है।

- सुमित भारती

सोशल मीडियाः वास्तविक दुनिया से आभासी दुनिया की ओर एक दौड़

संभवतः ये शीर्षक कुछ लोगों को पंसद न आये जो सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं और अपनी कथा या व्यथा इस मंच पर आकर व्यक्त करते हैं किन्तु मेरा अभिप्राय इस विषय पर पाठकों के सामने कुछ तथ्य प्रस्तुत करना है। बदलते परिवेश में जहाँ आम लोग समाज से दूर होते जा रहे हैं। वही सोशल मीडिया पर एक भीड़ बढ़ती जा रही है। आईये हम गत पिछले डेढ़ दशक पर एक नजर डाले तो पता देखेगें कि वक्त ने समाज से काफी दूरी बढ़ा ली है। हम तीव्र गति से सूचना तन्त्र की गिरफ्त में तो हैं किन्तु आपसी भावनाओं से परे। मात्र एक दूसरे से प्राप्त मैसेज को लाइक करना या उसे आगे भेजना जो एक प्रचलन बन गया है उसमें हमारी विचारधारा कि अभिव्यक्ति कहीं ना कहीं लुप्त हो गयी है, जो आभासी तो है ही और सही भी नहीं है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जुड़ना उसका स्वभाव है किन्तु अनदेखे दोस्तों की लम्बी श्रृंखला बनाना या अपने दोस्तों के भी दोस्तों से सिर्फ प्रभावित होकर जुड़ना शायद ठीक नहीं है। किसी की प्रोफाइल देख कर जुड़ना ठीक नहीं, पता नहीं वो अनजान आपके जीवन की शांति को कब भंग कर दे या आपको व्यक्तिगत रूप से हानि पहुँचा दे, और वैसे भी सभी को समान्तर रूप से निभाना संभव ही नहीं है। फिर ऐसे में दोस्ती के बड़े बड़े वादे किस लिए?

इन सभी आभासी रिश्तों असली सक्रियता समाप्त हो रही है क्योंकि आप पड़ोसी की मदद में तो सक्रिय नहीं है किन्तु बार बार अपनी साईट देखते रहते हैं कि कब किसी की बात को लाइक करे, शेयर करें या उसके सबके लिए लोकप्रिय बनाने के लिए फॉरवर्ड करें आखिर है न ये एक सोचने वाली बात?

इस मीडिया से जुड़ कर व्यक्ति प्रायः भीड में भी अकेला है वो सर सिर्फ अपने गेजेट पर ही केन्द्रित है। जब हम ऐसी स्थिति पर हैं तो सिर्फ और सिर्फ अकेले ही है क्योंकि हम में आत्मीयता और भावना दोनों ही नहीं होती। जैसे ही विषय के सकारात्मक व नकारात्म दोनों पक्ष होते है इस विषय के कुछ प्रमुख सकारात्मक तथ्य भी है यथा - अच्छे संवादों का प्रसारण व प्रचार हो रहा है। प्रमुख संवादों पर चर्चा हो रही है और परिणाम सामने आ रहे हैं।

अन्तराष्ट्रीय सम्बनध भी इसके माध्यम से विकसित हो पा रहे हैं। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले अपनी भावनाओं के सहारे अपना पक्ष रख रहे है और समाज से जुड़ रहे है। हमें इसके इन नकारात्मक पक्ष को भी ध्यान में रखना होगा और सतर्क रहना होगा कि : हम अपनी वास्तविक दुनिया से तो दूर नहीं हो रहे है, हमने अपने परिवार व आस-पास के लोगों से तो संपर्क साध रखा है ना? हम लेखन या कृतित्व से परे तो नहीं है। हममें अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति करने की तो क्षमता है ना?

हम अपनी तस्वीर या ऐसी कोई सूचना तो हमारे अपलोड नहीं कर रहे जो हमारी छवि या भविष्य के लिए खतरा बन जाये? हमें साइबर बुलिंक से भी बचना होगा। मेरे विचार और संदेश में मात्र इतनी सी बात है कि आप आभासी दुनिया में अपने आप को इतना मत जोड़ लेना कि वो आपकी आदत या व्यसन बन जाये। जुडाव अवश्य रखें लेकिन अपने परिवार अपने पड़ोस रिश्तेदार व अपने परिवेश से और उनके लिए सकर्म साथी बने रहे। आइये हम वास्तविक समाज व अपनों से जुड़े और मशीन से बाहर निकल कर रिश्ते बनाये जो संभवतया आजीवन साथ निभाएंगे।

अक्षया गणोंरकर- एम.के. अंतिम वर्ष

वक्त

यह वक्त बड़ा बेदर्द है,
भुला देता हर दर्द है।
वक्त बड़ा ही सख्त है।
पलट देता बड़े बड़ों का तख्त है।।

जो जान लेता है इसको, होकर तप्त है,
उसी का नाम बुंलद हर वक्त है।
हुआ बहुतों का सूर्य इसके आगे अस्त है,
हिटलर जैसे तानाशाह भी इसके आगे पस्त है।।

वक्त ही बनाता है राजा,
वक्त ही बना देता है रंक।
जिसने इसको नहीं है जाना,
झड़ गए हैं उसके हर पंख।।
जो जान ले इस वक्त को,
पहचान ले इस वक्त को।
जो जीत ले अपने आपको,
पा लेता है, ऊँचाई के हर तख्त को।।
तोड़ दे बंधन को सब
छोड़ दे आलस्य को अब
सोच ले ये बस अभी,
पाना है सब कुछ यही।

- प्रवीण शर्मा

सद्गुरू के आदेश पर विचार नहीं, अमल किया जाता है।

प्रकाशक एवं सम्पादक आचार्य डॉ. ज्योति जोशी, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
सदस्य, सम्पादक मंडल : अशोक अग्रवाल एवं अंशु सक्सैना
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalace.com